अन्धार

एक और पहलू

इश्क़-इश्क़-इश्क़

'ग़ालिब'

हाड़ मांस का बना ऐसा कौन भलामानस है जो अपनी छाती पर हाथ रखकर कह सकता है कि उसने अपने बचपन, जवानी या बुढ़ापे में कभी किसी से इश्क़ नहीं किया? फिर भला उर्दू के अदीब और शायर इस भावना से किस प्रकार अपवादित रह सकते हैं।

'ग़ालिब' एक सितमपेशा डोमनी पर आशिक़ हो गए थे और उन्होंने कहा था -

इश्क़ पर जोर नहीं है ये वो आतिश 'ग़ालिब'
कि लगाए न लगे और बुझाए न बने

'दाग़'

'दाग़' कलकत्ता की एक वेश्या मुन्नी बाई 'हिजाब' पर आशिक़ हुए तो चौहत्तर वर्ष की आयु तक यानी जब तक उन्होंने शरीर नहीं छोड़ा, इश्क़ भी नहीं छोड़ा और आज भी वेश्याएँ अपने कोठों पर सबसे अधिक 'दाग़' ही क़ी गज़लें गाती हैं।

मीर तकी 'मीर' अत्तार के एक लौंडे के अलावा खां 'आरजू' की बेटी पर ऐसे आशिक़ हुए कि एकांतवासी हो गए। हर समय एक कोठरी में पड़े रोते रहते और उन्माद रोग में ग्रस्त होकर उन्होंने --

दिल गया, रुसवा हुए, आखिर को सौदा हो गया
इस दो रोजा जीस्त में हम पर भी क्या-क्या हो गया

और

सरहाने 'मीर' के अहिस्ता बोलो
अभी टुक रोते-रोते सो गया है

मीर तकी 'मीर'

(शेष अंतिम भीतरी आवरण पृष्ठ पर)

अक्षर

विचारशीलता और बौद्धिक हस्तक्षेप का उपक्रम

सम्पादक
प्रियंवद

उप सम्पादक
जीवेश प्रभाकर

वर्ष:24 - अंक:67
जुलाई 2024

यह अंक
https://notnul.com
पर उपलब्ध है ।

एक प्रति	- 50 /- रु.
वार्षिक सदस्यता	- 250/- रु.
संस्थागत वार्षिक सदस्यता	- 400/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता (व्यक्तिगत)	- 700/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता (संस्थागत)	- 900/- रु.
आजीवन सदस्यता (व्यक्तिगत)	- 2000/- रु.
संस्थागत आजीवन सदस्यता	- 3000/- रु.

(पत्रिका के समस्त सदस्यता शुल्क मे रजिस्टर्ड डाक खर्च सम्मिलित है।)

प्रकाशक: अकार प्रकाशन, B -204, रतन सैफ़ायर,16/70,सिविल लाइन्स कानपुर - 208001
ई मेल - akarprakashan@gmail.com
सम्पर्क :
प्रियंवद
B -204, रतन सैफ़ायर,16/70, सिविल लाइन्स कानपुर - 208001
ई मेल - priyamvadd@gmail.com (मो.) 9839215236

जीवेश प्रभाकर :
69/2113, रोहिणीपुरम -2, रायपुर-492001 (छ.ग.)
ई मेल - jeeveshprabhakar@gmail.com मो. - 09425506574
आवरण :- आवरण में ली गई पेंटिंग प्रियंवद के पुराने कागजों में मिली है, पेंटिंग में नाम अस्पष्ट है जिसके कारण यहाँ नहीं दे पा रहे हैं। यदि किसी को पता हो तो बताएं।
मुद्रक
सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर, बीकानेर - 334003, फोनः - 0151-2242023
कम्पोज़िंग
विकल्प विमर्श, 87 निगम कॉलोनी, रायपुर - 492 001
सम्पादन व संचालन अवैतनिक । समस्त विवाद कानपुर न्याय क्षेत्र के अन्तर्गत होंगे । पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विचार सम्बन्धित लेखक के अपने हैं । सम्पादक अथवा प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

आप 'अकार' के लिये धन राशि अपने क्षेत्र के 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी ब्रांच में जमा करा सकते हैं। 'अकार' के खाते के ब्यौरे नीचे दिए जा रहे हैं। आपको 'अकार' के खाते में राशि जमा कराने के लिये शुरू के चार ब्यौरों की जरूरत पड़ेगी। नेट द्वारा जमा कराने पर शेष दो ब्यौरे भी काम आएंगे।

Name of the Firm which Holds the bank Account :- AKAR PRAKASHAN
Bank Name :- Bank of Baroda, Bank Adress :- Panki, Site - 1, Kanpur - 208002.,
Bank Account No.- 09620200000089 MICR Code :- 208012012
IFSC Code :- BARB0PANKIX (0 is ZERO, NOT ALPHABETICAL O)

अनुक्रम

1. **अकथ :** गुलामों के मृत्युदंड के पक्ष में दी गयी वक्तृता - *प्रियंवद* 04

2. **लेख :** मृत्यु-नाद - *लाल्टू* 12

3. **लेख :** स्मृतियों में सिनेमा-5
बिमल रॉय की स्त्रियाँ - कानन देवी से नूतन तक! - *जितेन्द्र भाटिया* 19

4. **तिनका-तिनका :** बुलडोजर और पुरस्कार - *प्रकाश चंद्रायन* 45

5. **लेख :** विप्लव-युद्ध में अर्द्धंगिनियाँ
आंचल को परचम बनाने वाली क्रांतिकारी विरासत - *सुधीर विद्यार्थी* 51

6. **कहानी** : स्कायलार्क का आकाश! - *प्रकाश कान्त* 67

7. **कविता** : अंतहीन लड़ाई - *प्रियंका यादव*.....75

8. **प्रसंग-अप्रसंग :** हिंदी पत्रकारिता :
कुछ स्मृतियाँ, प्रवृत्तियां, परिवर्तन और विचलन - *नवीन जोशी* 78

9. **शहरनामा** : किस्सों का शहर : मुज़फ़्फ़रपुर - *वीरेन नंदा* 91

10 **ख़ाका :** अधूरा हूँ मैं अफ़साना ... मदनमोहन के सौ बरस - *यूनुस ख़ान* 110

11. **लेख** : स्त्री व दलित समाज के सशक्तीकरण के लिए समर्पित
प्रो. (डॉ.) रूपा कुलकर्णी बोधी - प्रो. *कुसुम पटोरिया* 118

12. **ज़िंदगीनामा :** एक प्राचार्य ऐसे भी - *जीवन सिंह* 122

गुलामों के मृत्युदंड के पक्ष में दी गयी वक्तृता

इस्वाकू सामान्य मनुष्य नहीं था । अपने समय का प्रकाण्ड विद्वान, ज्ञानी और तार्किक था। वह एक दार्शनिक का विवेक, चेतना और तर्कशक्ति रखता था । नीतिशास्त्र, धर्म, राजनीति में पारंगत था। राज्य के महत्त्वपूर्ण फैसलों में सर्वोच्च सभा के सामने अन्तिम भाषण देता था। उसके विचार और उसका निर्णय ही अक्सर राज्य की नीति और निर्णय भी बनाता था। दूसरे राज्यों के साथ कोई जटिल स्थिति या युद्ध की संभावना से पहले उसे राज्य का दूत बना कर दूसरे राज्य भेजा जाता था। वहाँ वह अपनी बात इस तरह रखता था कि अक्सर दूसरा राजा उसके पक्ष में हो जाता था। उसका भाषण इतना अर्थपूर्ण, तार्किक और स्पष्ट होता था कि उसके शत्रु भी उसे पूरी एकाग्रता और उत्सुकता से सुनते थे। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वह राज्यों के आपसी विवाद भी हल करता था। उसके तर्क बहुत महीन और पैने होते थे। भाषणों में वह शब्दों को हाट की दुकान पर रखे समान की तरह सजा कर बोलता था । उसके वाक्य तराशे हुए, नुकीले होते थे। वह किसी भी विषय पर बोल सकता था, पर उसने राज्य, राजनीति, मानव मन और स्वभाव का विशेष और सूक्ष्म अध्ययन किया था । किसी भी वासना, लोभ और महत्त्वाकांक्षा से अलग रहते हुए, वह सादा, संयमित जीवन जीता था। उसके शिष्यों की संख्या बहुत बड़ी थी। माँ बाप अपनी सन्तानों को उसके पास शिक्षा लेने के लिए भेजते थे ।

अपनी बनावट में वह लम्बा था । उसके बाल भी लम्बे थे। फूलों के गुच्छों की तरह कंधों पर झूलते थे। पहली नजर में उसमें कुछ भी खास नहीं दिखता था, पर उसकी सज-धज और व्यवहार अपने लिए सम्मान पैदा करता था। उसके कपड़े हमेशा साफ-सुथरे होते थे। बातचीत, हाव-भाव में वह हमेशा गंभीर और संतुलित रहता था। लोग उसका साथ पाना चाहते थे। उसकी पूरी जिन्दगी बिना किसी दाग, कलंक या धब्बे के गुजरी थी। उसका मानना था वह